परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था
दूरस्थ शिक्षण कार्यक्रम

- विषय – हिंदी
- कक्षा – छठवीं
- पुस्तक – बाल रामायण
- शीर्षक – जंगल और जनकपुर
- मॉड्यूल -1/2

- प्रस्तौता – सत्यवीर गिरि
- विद्यालय – परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, कुडनकुलम

जंगल और जनकपुर
मॉड्यूल – 1/2

- विद्यार्थियों की अध्ययन सुगमता को दृष्टिगत रखते हुए इस पाठ को दो भागों में विभाजित किया गया है | यह पाठ का प्रथम भाग है| इस भाग में मूल कथावस्तु तथा कथावस्तु से संबंधित संभावित प्रश्न/उत्तर दिए गए हैं |
- मूल कथावस्तु भाग में कठिन शब्दों के अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है |
- प्रश्नोत्तर भाग में विद्यार्थियों की अवबोधन क्षमता को परखने के लिए पाठ के संभावित प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं |

जंगल और जनकपुर
मॉड्यूल – 1/2

मूल कथावस्तु भाग -1

राजमहल से निकलकर महर्षि विश्वामित्र सरयू नदी की ओर बढ़े। दोनों राजकुमार साथ थे। उन्हें नदी पार करनी थी। आश्रम पहुँचने के लिए। विश्वामित्र ने अयोध्या के निकट नदी पार नहीं की। दूर तक सरयू के किनारे-किनारे चलते रहे। दक्षिणी तट पर। उसी तट पर, जिस पर अयोध्या नगरी थी।

वे चलते रहे। नदी के घुमाव के साथ-साथ। राजमहल पीछे छूट गया। उसकी आखिरी बस्ती भी निकल गई। चलते-चलत एक तीखा मोड़ आया तो सब कुछ दृष्टि से ओझल हो गया।

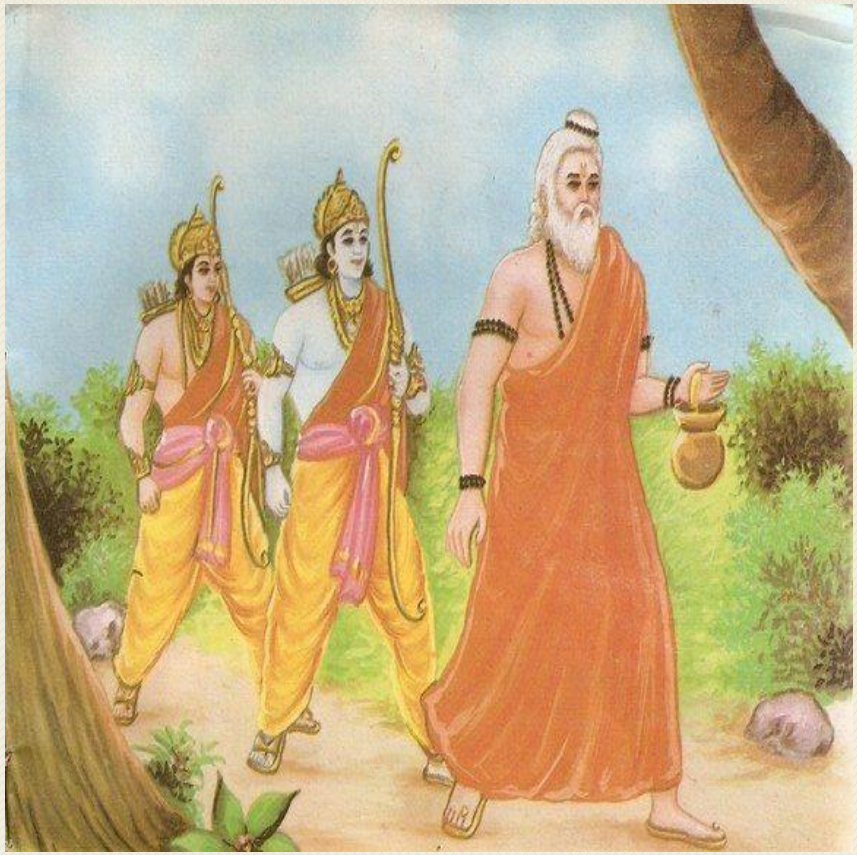

शब्दार्थ :- महर्षि= तपस्वी, तट=किनारा, घुमाव= मोड़, तीखा= तेज़

जंगल और जनकपुर
मॉड्यूल – 1/2

राम और लक्ष्मण ने एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनकी नज़र सामने थी। महर्षि विश्वामित्र के सधे कदमों की ओर। सूरज की चमक धीमी पड़ने लगी। शाम होने को आई। राजकुमारों के चेहरों पर थकान का कोई चिह्न नहीं था। उत्साह था। वे दिन भर पैदल चले थे। और चलने को तैयार थे।

महर्षि अचानक रुके। उन्होंने आसमान पर दृष्टि डाली। चिड़ियों के झुंड अपने बसेरे की ओर लौट रहे थे। आसमान मटमैला-लाल हो गया था। चरवाहे लौट रहे थे। गायों के पैर से उठती धूल में आधे छिपे हुए।

शब्दार्थ :- नज़र=दृष्टि, बसेरा=रहने का स्थान, मटमैला =मिट्टी के रंग जैसा, चरवाहे= पशु चराने वाले

जंगल और जनकपुर
मॉड्यूल – 1/2

"हम आज रात नदी तट पर ही विश्राम करेंगे," महर्षि ने पीछे मुड़ते हुए कहा। दोनों राजकुमारों के चेहरे के भाव देखते हुए विश्वामित्र हलका-सा मुसकराए। राम के निकट आते हुए उन्होंने कहा, "मैं तुम दोनों को कुछ विद्याएँ सिखाना चाहता हूँ। इन्हें सीखने के बाद कोई तुम पर प्रहार नहीं कर सकेगा। उस समय भी नहीं, जब तुम नींद में रहो।"

राम और लक्ष्मण नदी में मुँह-हाथ धोकर लौटे। महर्षि के निकट आकर बैठे। विश्वामित्र ने दोनों भाइयों को 'बला-अतिबला' नाम की विद्याएँ सिखाईं। रात में वे लोग वहीं सोए। तिनकों और पत्तों का बिस्तर बनाकर। नींद आने तक महर्षि उनसे बात करते रहे।

शब्दार्थ :- प्रहार=चोट

जंगल और जनकपुर
मॉड्यूल – 1/2

सुबह हुई। यात्रा फिर शुरू हुई। मार्ग वही था। सरयू नदी के किनारे-किनारे। चलते-चलते वे एक ऐसी जगह पहुँचे, जहाँ दो नदियाँ आपस में मिलती थीं। उस संगम की दूसरी नदी गंगा थी। महर्षि अब भी आगे चल रहे थे। लेकिन एक अंतर आ गया था। राम-लक्ष्मण अब दूरी बनाकर नहीं चलते थे। महर्षि के ठीक पीछे थे ताकि उनकी बातें ध्यान से सुन सकें। रास्ते में पड़ने वाले आश्रमों के बारे में। वहाँ के लोगों के बारे में। वृक्षों-वनस्पतियों के संबंध में। स्थानीय इतिहास उसमें शामिल होता था|

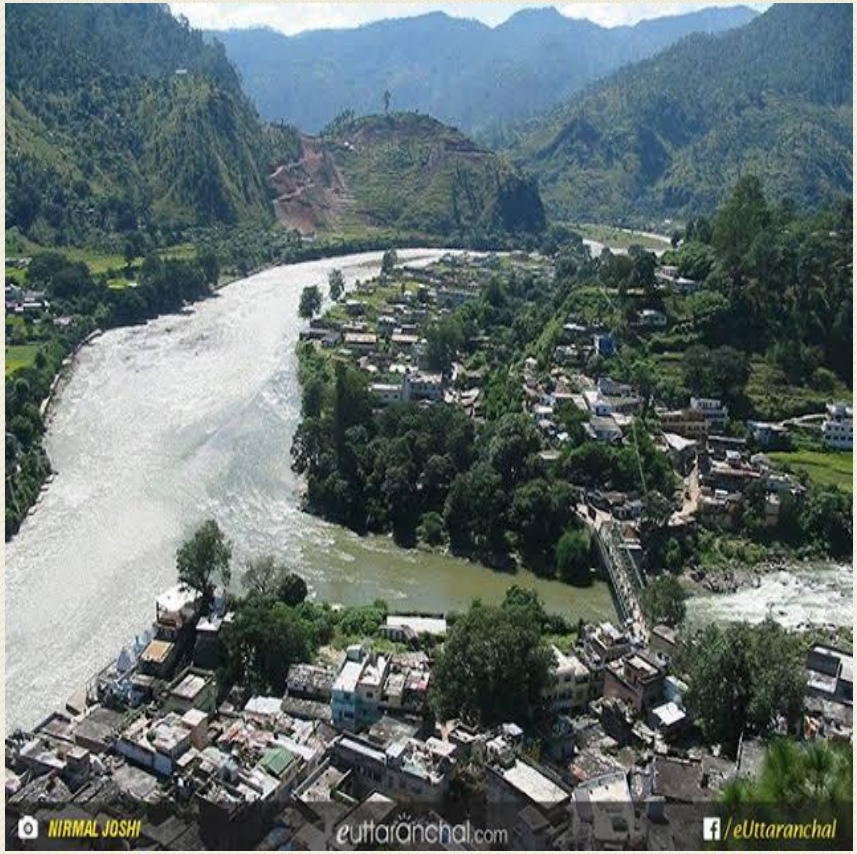

शब्दार्थ :- संगम= जहां दो या दो से अधिक नदियाँ मिलती हैं, वनस्पति= लता-पताएँ, स्थानीय=स्थान से संबन्धित

जंगल और जनकपुर
मॉड्यूल – 1/2

आगे की यात्रा कठिन थी। जंगलों से होकर। उससे पहले उन्हें नदी पार करनी थी। रात में ऐसा करना महर्षि विश्वामित्र को उचित नहीं लगा। तीनों लोग वहीं रुक गए। संगम पर बने एक आश्रम में। अगली सुबह उन्होंने नाव से गंगा पार की।

नदी पार जंगल था। घना। दुर्गम। सूरज की किरणें धरती तक नहीं पहुँचती थीं, इतना घना। वह डरावना भी था। हर ओर से झींगुरों की आवाज़। जानवरों की दहाड़। कर्कश ध्वनियाँ। राम और लक्ष्मण को आश्वस्त करते हुए महर्षि ने कहा, "ये जानवर और वनस्पतियाँ जंगल की शोभा हैं। इनसे कोई डर नहीं है। असली खतरा राक्षसी ताड़का से है। वह यहीं रहती है। तुम्हें वह खतरा हमेशा के लिए मिटा देना है।"

शब्दार्थ :- कठिन=मुश्किल, उचित= सही, दुर्गम= जहाँ जाना कठिन हो, कर्कश=कठोर, आश्वस्त=भरोसा दिलाना, शोभा=सुंदरता

जंगल और जनकपुर
मॉड्यूल – 1/2

ताड़का के डर से कोई उस वन में नहीं आता था। जो भी आता, ताड़का उसे मार डालती। अचानक आक्रमण कर देती। उसका डर इतना था कि उस सुंदर वन का नाम 'ताड़का वन' पड़ गया था।

राम ने महर्षि की आज्ञा मान ली। धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाई। और उसे एक बार खींचकर छोड़ा। इतना ताड़का को क्रोधित करने के लिए बहुत था। टँकार सुनते ही क्रोध से बिलबिलाई ताड़का गरजती हुई राम की ओर दौड़ी। दो बालकों को देखकर उसका क्रोध और भड़क उठा।

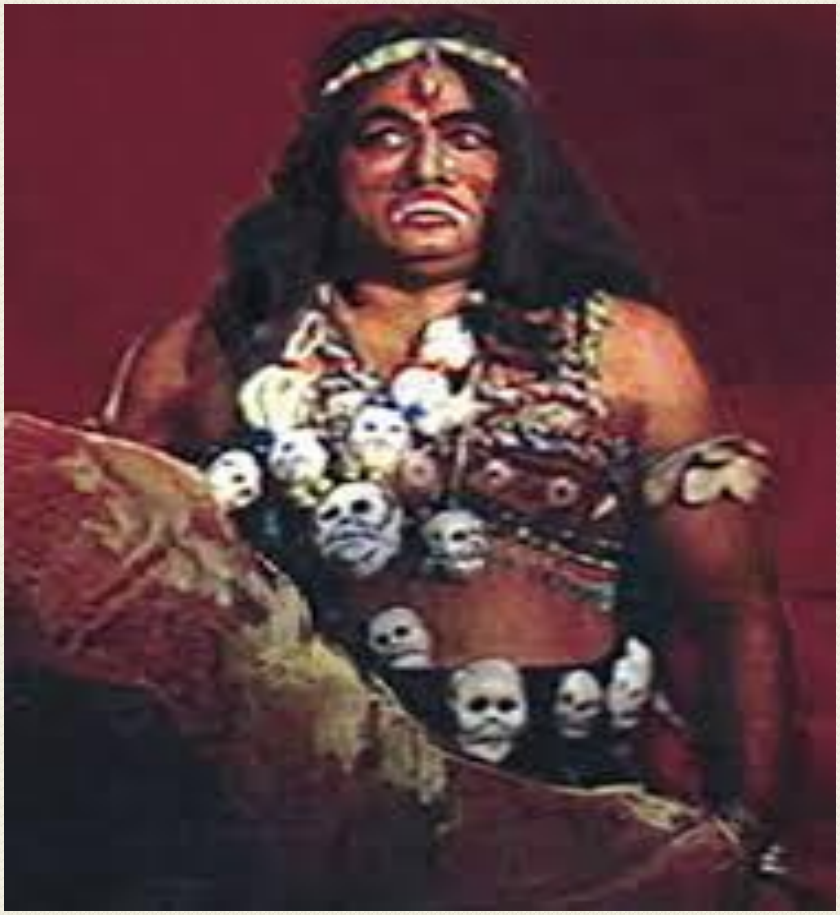

शब्दार्थ :- आक्रमण=हमला, आज्ञा=आदेश, प्रत्यंचा=धनुष की डोरी, क्रोधित=गुस्सा में, टँकार=ज़ोर की आवाज़, गरजती हुई=क्रोध से भरी हुई

जंगल और जनकपुर
मॉड्यूल – 1/2

जंगल में जैसे तूफान आ गया। विशालकाय पेड़ काँप उठे। पत्ते टूटकर इधर-उधर उड़ने लगे। धूल का घना बादल छा गया। उसमें कुछ दिखाई नहीं पड़ता था। फिर ताड़का ने पत्थर बरसाने शुरू कर दिए। राम ने उस पर बाण चलाए। लक्ष्मण ने भी निशाना साधा। ताड़का बाणों से घिर गई। राम का एक बाण उसके हृदय में लगा। वह गिर पड़ी। फिर नहीं उठ पाई।

विश्वामित्र बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने राम को गले लगा लिया। उन्होंने दोनों राजकुमारों को सौ तरह के नए अस्त्र-शस्त्र दिए। उनका प्रयोग करने की विधि बताई। उनका महत्त्व समझाया।

शब्दार्थ :- विशालकाय=बहुत ही बड़ा, हृदय=दिल, प्रसन्न=खुश, अस्त्र= फेंककर चलाया जाने वाला हथियार, शस्त्र= हाथ में लेकर चलाया जाने वाला हथियार

जंगल और जनकपुर
मॉड्यूल – 1/2

महर्षिका आश्रम वहाँ से अधिक दूर नहीं था। लेकिन तब तक रात हो चली थी। विश्वामित्र ने वह दूरी अगले दिन तय करने का निर्णय लिया। ताड़का मर चुकी थी। उसका भय नहीं था। तीनों ने रात वहीं बिताई। ताड़का वन में, जो अब पूरी तरह भयमुक्त था।

सुबह जंगल बदला हुआ था। अब वह ताड़का वन नहीं था। क्योंकि ताड़का नही थी। भयानक आवाजें गायब हो चुकी थीं। पत्तों से गुजरती हवा थी। उसकी सरसराहट का संगीत था। चिड़ियों की चहचहाहट थी। शांति थी। तसवीर बदल गई थी।

शब्दार्थ :- निर्णय=फैसला, भय=डर,
सरसराहट=हवा के चलने की आवाज़,
चहचहाहट=पक्षियों की आवाज़,
तस्वीर=चित्र

जंगल और जनकपुर
मॉड्यूल – 1/2

सिद्धाश्रम का अंतिम पड़ाव था-महर्षि का आश्रम। रास्ता छोटा भी था। मनोहारी भी। प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते तीनों लोग जल्दी ही आश्रम पहुँच गए। आश्रमवासियों ने उनकी अगवानी की। अभिनंदन किया। उनकी प्रसन्नता दुगुनी हो गई थी। महर्षि विश्वामित्र के आश्रम लौटने की खुशी। राम-लक्ष्मण के आगमन का सुख!

विश्वामित्र यज्ञ की तैयारियों में लग गए। अनुष्ठान प्रारंभ हुआ। आश्रम की रक्षा की जिम्मेदारी राम-लक्ष्मण को सौंपकर महर्षि आश्वस्त थे। अनुष्ठान अपने अंतिम चरण में था। पूरा होने वाला था। कुछ ही दिनों में।

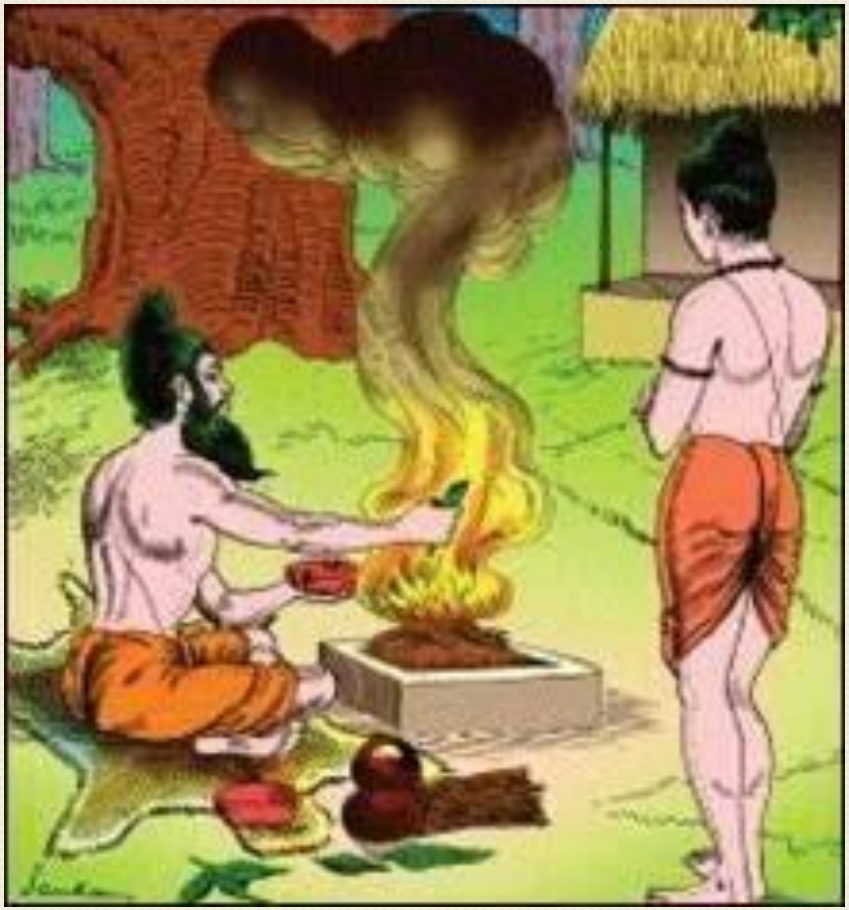

शब्दार्थ :- अंतिम=आखिरी, पड़ाव=चरण, मनोहारी= मन को अच्छा लगने वाला, सौंदर्य=सुंदरता, अगवानी=स्वागत, अनुष्ठान=धार्मिक कृत्य यज्ञ आदि, आश्वस्त=चिंता मुक्त

प्रश्नोत्तर भाग

प्रश्न-1 राजमहल से निकलकर राम-लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ कौन-सी नदी के किनारे जा रहे थे ?

उत्तर :- सरयू नदी

प्रश्न-2 वन में विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को कौन-सी विद्याएँ सिखाईं ?

उत्तर :- बला-अतिबला

प्रश्न-3 बला-अतिबला विद्याओं की क्या विशेषता थी ?

उत्तर :- इन विद्याओं को जानने वाले पर कोई भी प्रहार नहीं कर सकता था | तब भी नहीं जब वह नींद में हो |

जंगल और जनकपुर
मॉड्यूल – 1/2

प्रश्न-4 ताड़का कहाँ रहती थी ?

उत्तर :- ताड़का सुंदर वन में रहती थी |

प्रश्न-5 विश्वामित्र के आश्रम का क्या नाम था ?

उत्तर – विश्वामित्र के आश्रम का नाम सिद्धाश्रम था |

प्रश्न-6 चलते समय राम और लक्ष्मण की नज़र कहाँ थी ?

उत्तर - चलते समय राम और लक्ष्मण की नज़र महर्षि विश्वामित्र के सधे कदमो की ओर थी ।

प्रश्न-7 राजकुमारों के चेहरों पर थकान का कोई चिह्न क्यों नहीं था ?

उत्तर - दोनों राजकुमार उत्साहित थे इसीलिए उनके चेहरों पर थकान का कोई चिह्न नहीं था ।

जंगल और जनकपुर
मॉड्यूल – 1/2

प्रश्न-8 अयोध्या नगरी सरयू नदी के किस तट पर थी ?

उत्तर- अयोध्या नगरी सरयू नदी के दक्षिणी तट पर थी ।

प्रश्न-9 चलते - चलते कब महर्षि विश्वामित्र और राजकुमारों के दृष्टि से सब कुछ ओझल हो गया ?

उत्तर - चलते – चलते एक तीखा मोड़ आया तब महर्षि विश्वामित्र और राजकुमारों के दृष्टि से सब कुछ ओझल हो गया ।

जंगल और जनकपुर
मॉड्यूल – 1/2

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न – राजमहल से निकलकर राम-लक्ष्मण ने एक बार भी पीछे मुड़कर क्यों नहीं देखा?

प्रश्न – सूर्यास्त के समय का शब्द-चित्र वर्णन कीजिये।

प्रश्न – सारा दिन पैदल चलने बाद भी दोनों भाइयों के चेहरे पर किस प्रकार के भाव थे?

प्रश्न – ताड़का वन का आपने शब्दों में वर्णन कीजिये।

प्रश्न – राम- लक्ष्मण ने ताड़का का वध किस प्रकार किया ?

प्रश्न – अस्त्र और शस्त्र में क्या अंतर है ?

प्रश्न –ताड़का के मरने के बाद सुंदर वन में क्या बदलाव आया ?